SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम – 695001

शाखा कार्यालय, एरणाकुलम में हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023 के दौरान आयोजित पोस्टर डिज़ाइनिंग प्रतियोगिता में "चंद्रयान" विषय पर प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए पोस्टर

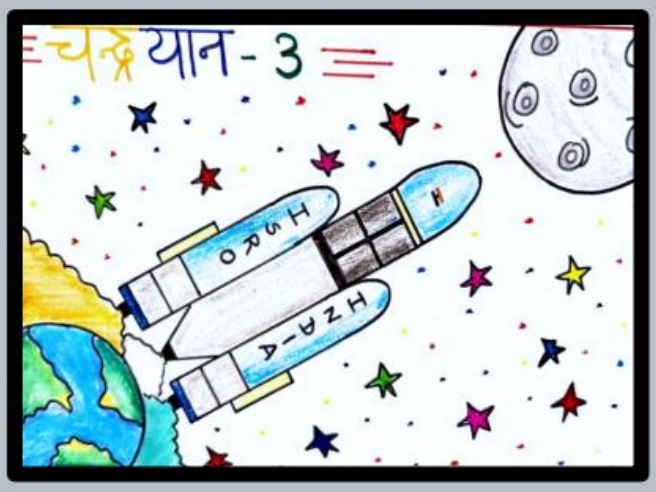

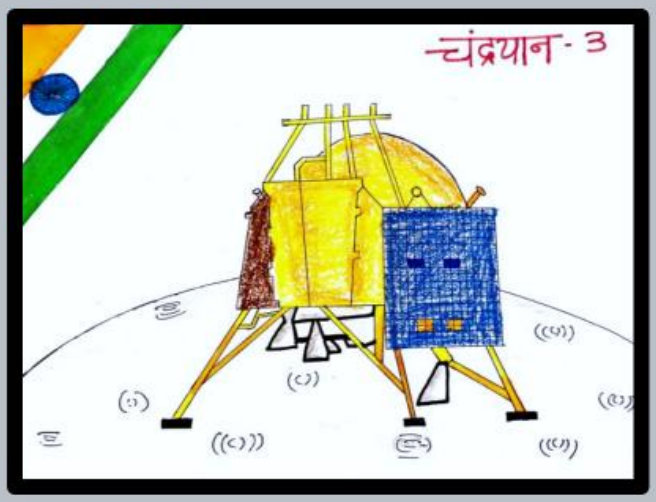

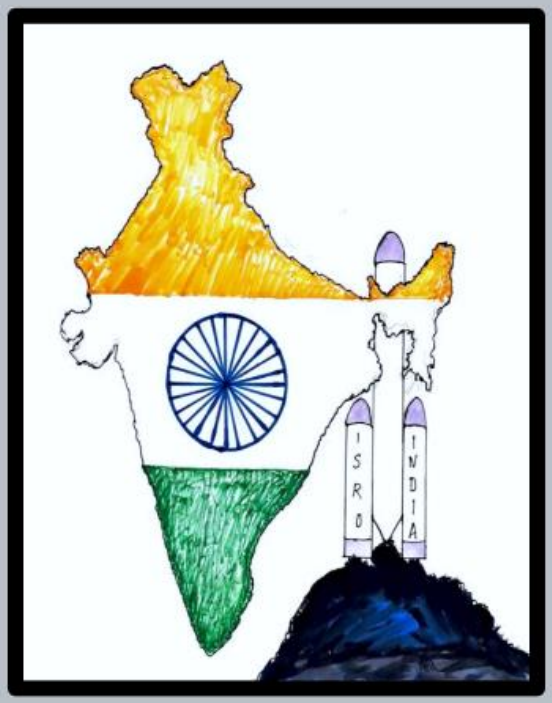

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

हिंदी गृह पत्रिका

(34वां अंक)

(01 अक्तूबर 2023 से 31 मार्च 2024 तक)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम – 695001

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

सुश्री अतूर्वा सिन्हा
महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्री बाषा मोहम्मद बी
उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदात्री समिति

श्री बिजू जोसफ
वरिष्ठ उप महालेखाकार

श्री एन दिनकरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार

सुश्री सबिता बालकृष्णन
वरिष्ठ उप महालेखाकार

सुश्री उषा एस पिल्लई
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

सुश्री राजेश्वरी के पी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

सुश्री के आर रोहिणी
हिंदी अधिकारी, संपादक

संपादन सहयोग

सुश्री एस संध्या
हिंदी अधिकारी

सुश्री गेलीकृष्णा सी जी
हिंदी अधिकारी

सुश्री निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री अंकित पाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री प्रज्ञा मौर्या
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है । रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे ।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	संरक्षक की कलम से.....	
2.	मुख्य संपादक की कलम से.....	
3.	आपके पत्र.....	
4.	तृतीय ऑडिट दिवस	
5.	कराटे का जन्मस्थान जापान नहीं, बल्कि ओकिनावा है	शाश्वत सागर, वरिष्ठ लेखाकार
6.	हिंदी साहित्य की महान विभूति-सुभद्रा कुमारी चौहान	
7.	गरीबी का स्तुतिगान	पारस कुमार शिवा, सहायक लेखा अधिकारी
8.	भक्त शिरोमणि – मीरा बाई	रेणुका जोशी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
9.	परिवार का सहारा	सिंधु सी सी, सहायक लेखा अधिकारी
10.	बाल श्रम – समाज का गहरा दोष	जिनु अब्रहाम, सहायक पर्यवेक्षक
11.	प्रश्नोत्तर	लक्ष्मिप्रिया टी जी, सहायक लेखा अधिकारी
12.	केरल का दिल – एरणाकुलम की एक झलक	आन्ड्रिया लुइस, वरिष्ठ लेखाकार
13.	गणतंत्र दिवस समारोह 2024 की झलकियाँ	
14.	बुलबुल	राहुल कुमार, लेखाकार
15.	सफर	
16.	आँख बिछाके	
17.	हिंदी साहित्य की महान विभूति-हज़ारी प्रसाद द्विवेदी	
18.	हिंदी साहित्य की महान विभूति-आचार्य शिवपूजन सहाय	
19.	हिंदी साहित्य की महान विभूति-राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन	
20.	01.10.2023 से 31.03.2024 के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची	
21.	आम प्रयोग के अंग्रेज़ी-हिंदी वाक्यांश	

हिंदी भाषा की उत्पत्ति एवं क्रमिक विकास

हिंदी भारोपीय परिवार की आधुनिक काल की प्रमुख भाषाओं में एक है।

भारतीय आर्य भाषाओं का विकास क्रम –

संस्कृत

⇩

पालि

⇩

प्राकृत

⇩

अपभ्रंश

⇩

हिंदी एवं अन्य भारतीय आर्यभाषाएँ

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अतूर्वा सिन्हा

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल

संरक्षक की कलम से .....

कार्यालयीन हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 34वें अंक का ई-प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है। हमारा देश सांस्कृतिक और भाषाई दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनमानस से जुडी भाषा ही सरकारी कामकाज की भाषा हो सकती है। भारत में हिंदी भाषा ने विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए जनता के मन में विशेष स्थान प्राप्त किया है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हिंदी को समृद्ध किया है। हिंदी की इसी विशेषता को ध्यान में रखते हुए संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। राजभाषा हिंदी को लेकर संविधान सभा द्वारा निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सभी नागरिकों, विशेषकर केंद्र सरकार के कार्मिकों को अथक प्रयास करना चाहिए। इन लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन महत्त्वपूर्ण प्रयास है। कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों के बीच हिंदी भाषा के प्रति जागरूकता प्रदान करने में यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

इस अवसर पर मैं उन सभी कार्मिकों का हृदय से अभिनंदन करती हूँ, जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना योगदान दिया है। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल व सभी रचनाकारों को अशेष शुभकामनाएँ।

(अतूर्वा सिन्हा)
महालेखाकार

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान : निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा !

जय हिंद !

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

बाषा मोहम्मद बी
उप महालेखाकार (प्रशासन)

मुख्य संपादक की कलम से.....

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "श्रुति" का नवीनतम अंक अंक पाठकों को समर्पित करते हुए मुझे अत्यंत गौरव एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हिंदी हमारी राजभाषा होने के साथ-साथ अखिल भारतीय स्तर पर समन्वय एवं संपर्क भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित है। भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में, केंद्र सरकार के कार्यालयों के सभी कार्मिकों को अपने दैनिक कार्यालयीन कार्यों के निष्पादन में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। हमारे कार्यालय में हिंदी का प्रचार प्रसार करने में पत्रिका "श्रुति" का योगदान सराहनीय रहा है। यह पत्रिका कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति दृढ़ निश्चय एवं रुचि दर्शाती है। इस पत्रिका ने राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए मंच प्रदान करने में भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

पत्रिका के इस अंक में कार्यालय के कार्मिकों की रचनाओं के साथ-साथ विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों की रिपोर्ट एवं तस्वीरें भी शामिल की गई हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के निरंतर विकास एवं प्रचार-प्रसार की दिशा में योगदान प्रदान करती रहेगी।

सभी सुधी पाठकों से आशा है कि वे पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं का आस्वादन करेंगे और अपनी प्रतिक्रियाओं व सुझावों से हमारा उत्साह बढाएंगे तथा मार्गदर्शन करेंगे।

पत्रिका "श्रुति" के उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ!

(बाषा मोहम्मद बी)
उप महालेखाकार (प्रशासन)

आपके पत्र .....

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
तमिलनाडु
लेखापरीक्षा भवन
361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट, चेन्नै - 600 018.
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
Tamil Nadu
"LEKHA PARIKSHA BHAVAN"
361, Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018.
सं/ No.

सं. प्र.मले. (लेप-I)/हिं. अनु./प्रशं. पत्र/14-02/2023-24/62 दि.:21.03.2024

सेवा में
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन) ,
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय ,
तिरुवनंतपुरम-695001

महोदय,

विषय- हिन्दी पत्रिका "श्रुति" पर अभिमत

हमें आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित "श्रुति" के 33 वें अंक की ~~प्रत~~ प्रति प्राप्त हुई। । राजभाषा हिन्दी के विकास में पत्रिका के माध्यम से किया गया यह प्रयास अत्यंत ही प्रशंसनीय है । पत्रिका में सभी रचनाएं अत्यंत रोचक एवं मनोरंजनपूर्ण है । विशेषकर **चटोरन, ईंट का तकिया, भारत- आनंद की भूमि, पर्यावरण दिवस, लत** आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय हैं। विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण भी अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका की साजसज्जा भी अत्यंत मनोहारी और प्रशंसनीय है । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादन मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सधन्यवाद,

भवदीय,
हिन्दी अधिकारी

दूरभाष / Phone : 044 - 2433 6400
फैक्स / Fax : 044 - 2433 0012
तार / E-mail : agautamilnadu1@cag.gov.in

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-हि.क./समीक्षा/23-24/143 दिनांक: 22/03/2024

सेवा में,

उप महालेखाकार(प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.)
केरल, तिरुवनन्तपुरम -695001

विषय: हिन्दी गृह पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर सुश्री श्रुति शर्मा की "पर्यावरण दिवस", श्री एम. टी. विजयन की "दुनिया और भूमंडलीय तापन", सुश्री रेणुका जोशी की "भारतवर्ष में हिन्दी भाषा का महत्व", श्री पारस कुमार शिवा की "ईंट का तकिया", श्री छोटूलाल मीणा की "नई दिल्ली से केरल" एवं श्री जयकुमार भास्करन की "पदोन्नति और लक्ष्य" आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं । कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है । पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ ।

भवदीया,

(हिंदी अधिकारी)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी ,
लेखापरीक्षा भवन , 361 , अण्णा सालई , तेनामपेट , चेन्नई – 600 018

सं . प्र.म.ले. (ले.प.-II)/हि.अ./7-38/प्रशंसा पत्र/2023-24/72 दिनांक: **21.03.2024**

सेवा में
श्री बाषा मोहम्मद बी
उप महालेखाकार (प्रशासन),
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) , केरल का कार्यालय ,
तिरुवनंतपुरम – 695001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका " श्रुति " के 33वें अंक का प्रशंसा पत्र ।

महोदय ,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका " श्रुति " के 33वें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

पत्रिका में समाहित समस्त रचनाएं पठनीय, रोचक एवं स्तरीय हैं। रचनाओं में "ईंट का तकिया" , "भारत आनंद की भूम " , "एक छोटा कदम, बड़ा बदलाव" , "हिंदी को मातृभाषा बनाएं" , "मिठास: कुछ अनमोल लम्हों की कहानी" विशेषकर उल्लेखनीय हैं । सभी रचनाकारों को पत्रिका में अपने योगदान देने के लिए तथा पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाइयां । पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व विकास हेतु हमारी ओर से शुभकामनाएं।

भवदीया,

वी चित्रा
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्र.मले.(लेप.-II), तमिलनाडु & पुदुचेरी
चेन्नई-18

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, नर्मदापुरम रोड, भोपाल- 462011
क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 81 दिनांक 27.03.2024

प्रति,
हिन्दी अधिकारी/हिन्दी कक्ष
महालेखाकार (ले.व ह.) केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम-695001

विषय :हिन्दी गृह पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की पावती बावत ।
संदर्भ : आपके पत्र स.हि.क/हि.गृ.प./श्रुति-2023-24 दिनांक 11.03.2024 ।

महोदय,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "श्रुति" के 33वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर भारत आनंद की भूमि, चक्रवृद्धि, एक छोटा कदम,बड़ा बदलाव, भारत वर्ष में हिन्दी भाषा का महत्व, दुनिया और भूमंडलीय तापन,मिठास कुछ अनमोल लमहों की कहानी, जीवन एक दौड़ है, एक दोस्त के बिछड़ने का दर्द, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

हिन्दी अधिकारी/हिन्दी कक्ष

आपके पत्र .....

From: "Hindi Cell PDA C Bengaluru" <hindicellpdc.kar1.au@cag.gov.in>
To: "AG AE Kerala Thiruvananthapuram" <agaekerala@cag.gov.in>
Sent: Thursday, March 21, 2024 3:18:59 PM

Subject: हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 33वें संस्करण की प्राप्ति -के संबंध में

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 33वें संस्करण की प्राप्ति हुई जिसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद। केरल राज्य के संबंध में पत्रिका के विभिन्न पृष्ठों पर छापे गए चित्र अत्यंत सुंदर हैं। संपादक मंडल द्वारा लिखा गया संपादकीय विशेष उल्लेखनीय है जो हिंदी के प्रति आपके असीम प्रेम को दर्शाता है। सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं जिसके लिए लेखक भी बधाई के पात्र हैं। केरल के विभिन्न पर्यटन स्थलों से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी आपकी पत्रिका से प्राप्त होती है। कार्यालय में आयोजित हिंदी से संबंधित गतिविधियों के चित्र आपके कार्यालय के कार्मिकों के हिंदी के प्रति उत्साह का द्योतक है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल तथा उसके लिए योगदान देने वाले सभी रचनकारों को हार्दिक बधाइयां तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
बेंगलूरु

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,
महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Principal Accountant General (Audit)-II,
Maharashtra, Nagpur-440001

सत्यमेव जयते

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/22/2023-24/जा.क्र. 112 दिनांक: -28/03/2024

सेवा में,
हिंदी अधिकारी
कार्यालय- महालेखाकार (ले. व ह.), केरल
तिरुवनन्तपुरम– 695 001

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्रं	नाम एवं पदनाम	रचनाएँ
1.	श्री पारस कुमार शिवा, स.ले.अ.	ईंट का तकिया
2.	श्रीमती प्रभा एल, स.ले.अ.	धन्य है यह जीवन
3.	सुश्री राजी राजन, स.ले.अ.	लत
4.	श्री आकाश मिश्रा, क. अनुवादक	चटोरन

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
28/3/24
प्रभारी हिंदी अधिकारी

'लेखापरीक्षा भवन', डाक बैनी क्र.220, सिविल लाईंस, नागपुर – 440001 'Audit Bhavan', Post Bag No.220, Civil Lines, Nagpur – 440001
दूरभाष/Telephone - 0712-2564506 to 2564508 Website : cag.gov.in/ag/nagpur/en e-mail : agaemaharashtra2@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

सत्यमेव जयते

सं.हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2023-24/3/9 दिनांक/Dated 22.03/2024

सेवा में

उप महालेखाकार(प्रशासन)
महालेखाकार(ले. व ह.) केरल का कार्यालय,
तिरुवनन्तपुरम

विषय - हिन्दी पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इनमें ईंट का तकिया, पर्यावरण दिवस, एक छोटा कदम, बड़ा बदलाव, जीवन एक दौड़ हैं, हिन्दी को मातृ भाषा बनायें आदि रचनाएँ काफी ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है।

आशा है पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य और आगामी अंको के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

भवदीय

हिन्दी अधिकारी 22/3/

महा निदेशक लेखापरीक्षा (केंन्द्रीय) का कार्यालय, चेन्नै
OFFICE OF THE DIRECTOR GENERAL OF AUDIT(CENTRAL)CHENNAI
शाखा कार्यालय, कोच्ची, गोल्डन जूबिली रोड, कलूर,कोच्ची- 682 017
BRANCH OFFICE KOCHI,GOLDEN JUBILEE ROAD,KALOOR KOCHI-682017
PHONE: 0484-2400203, FAX: 0484-2401895 Email: dgacbrkochi@cag.gov.in

सं:हि क /ले प /कोच्ची/विविध/2023-24 दिंनाक 25-03-2024

सेवा में
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) का कार्यालय,
केरल, तिरुवनन्तपुरम

विषय: कार्यालयीन पत्रिका श्रुति के 33 वें अंक की पावती –संबंधी।

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'श्रुति' के 33 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, भावपूर्ण एवं सार्थक हैं तथा पत्रिका का आवरण पृष्ठ एंव पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका की सभी रचनाएँ लेखकों की सृजनात्मकता एवं हिंदी के प्रति रुचि को दर्शाती हैं। पत्रिका की कुछ रचनाएँ –ईंट का तकिया, मून्नार की मोटर साईकिल यात्रा, धन्य है यह जीवन, एक अज्ञात द्वीप की यात्रा, चटोरन, हिंदी को मातृभाषा बनाएँ आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

'श्रुति' पत्रिका का 33 वां अंक देश के विभिन्न क्षेत्रों में एवं विशेष रूप से कार्यालय में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने में अवश्य सहायक सिद्ध होगी। पत्रिका से जुड़े सभी को सहर्ष धन्यवाद एंव पत्रिका के अगले अंक के लिए अग्रिम शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/का स्था (कोच्ची)

आपके पत्र .....

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II), KERALA, THIRUVANANTHAPURAM – 695 001

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2023-24 दिनांक: 25.03.2024

सेवा में,
उप महालेखाकार (प्रशासन)
महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय
तिरुवनंतपुरम - 695001

विषय:- पत्रिका की पावती – बाबत्

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्ध-वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका ''श्रुति'' के 33[वें] अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा हमेशा की तरह अत्यंत आकर्षक है और संपूर्ण सामग्री उत्कृष्ट और ज्ञानप्रद है। विशेषकर श्री पारस कुमार शिवा का लेख 'ईंट का तकिया', श्रीमती प्रभा एल का लेख 'धन्य है यह जीवन' एवं सुश्री लक्ष्मिप्रिया टी जी की कविता 'संध्या का समय' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीया,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

Phone: 0471 2330799 e-mail: agaukerala2@cag.gov.in Fax: 0471-2330699, 2332022

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

पत्रांक - क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2023-24/585 दिनांक : 28 .03.2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय- महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
केरल, तिरुवनंतपुरम

विषय:- हिंदी पत्रिका 'श्रुति' के 33वें अंक की पावती।

संदर्भ:- पत्रांक हिं.क./हि.गृ.प./श्रुति-2023-24/2023-24 दिनांक 11.03.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'श्रुति' का 33वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सादर धन्यवाद ।

पत्रिका की साज-सज्जा एवं कलेवर बहुत आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं बोधगम्य हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। कुछ रचनाएं विशेषकर **'ईंट का तकिया', 'भारत आनंद की भूमि', 'पर्यावरण दिवस', 'भारतवर्ष में हिंदी भाषा का महत्व'** एवं **'रात का सफर'** सराहनीय एवं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका में सम्मिलित कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र पत्रिका की शोभा को और बढ़ा रहें हैं।

पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा -प्रथम)
ऑडिट भवन, झाँसी रोड, ग्वालियर

क्रमांक/प्रशासन/हिंदी कार्यान्वयन कक्ष/सम्मति/ जावक- दिनांक:02-04-2024

प्रति,
हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

विषय - हिंदी पत्रिका 'श्रुति' के 33वें अंक की प्राप्ति पर सम्मति पत्र के प्रेषण के संबंध में |

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका 'श्रुति' के 33वें अंक की प्रति प्राप्त हुई है | सहर्ष धन्यवाद |

पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कविताएँ, ज्ञानवर्धक, रोचक एवं उच्च स्तरीय हैं | श्री शाश्वत सागर द्वारा लिखित लेख 'मून्नार की मोटर साइकिल यात्रा' में मून्नार की प्राकृतिक खूबसूरती का मनमोहक वर्णन है | सुश्री लक्ष्मीप्रिया टी.जी. द्वारा रचित कविता 'संध्या का समय' जीवन की नकारात्मक एवं सकारात्मक अनुभूतियों का भावपूर्ण वर्णन है | श्री जयकुमार भास्करन द्वारा लिखित लेख 'पदोन्नति और लक्ष्य' प्रशंसनीय है | सुश्री प्रीता वी.एस. द्वारा लिखित लेख 'बच्चों द्वारा मोबाइल फ़ोन इस्तेमाल करने का नकारात्मक प्रभाव' विचारणीय है | शेष रचनाएं भी अभिव्यक्ति की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं |

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं |

भवदीय,

SANJEEV KUMAR JHANJI
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिंदी कक्ष

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता - 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

सं. हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/पावती/05
दिनांक: 03.04.2024

सेवा में,
महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय,
तिरुवनन्तपुरम-695001

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की पावती संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय का पत्रांक- हि.क./हि.गृ.प./श्रुति-2023-24, दिनांक 11.03.2024 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "श्रुति" की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "श्रुति" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

इस "श्रुति" पत्रिका के सभी लेखकों को हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएं।

भवदीय,

3.4.2024
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी)

आपके पत्र .....

भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (पर्यावरण एवं वैज्ञानिक विभाग)
मुंबई शाखा, नव भवन, आर के मार्ग, बल्लार्ड एस्टेट, मुंबई
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Director General of Audit,(Environment and Scientific Departments)
Mumbai Branch, Nav Bhavan, R. K. Marg, Ballard Estate, Mumbai-400 001
Email: hrsdmumbai@cag.gov.in
Contact No.: 022- 2082 -3903/ 2146/ 4609, Fax: 022-2263-2414

सं.स्था./XIII(14)/विविध पत्रिकएँ/भाग-II/2023-24/ दिनांक:

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
तिरुवंतपुरम, केरल

विषय: हिन्दी पत्रिका **"श्रुति" के 33वें अंक** की ई-प्रति की पावती के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय पत्र ईमेल दिनांक: 20.03.2024 को संज्ञान में ले। इस संबंध में आपके कार्यालय से हिन्दी पत्रिका **"श्रुति" के 33वें अंक** की ई-प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपका आभारी है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं। 'ईंट का तकिया', 'धन्य है यह जीवन', 'भारतवर्ष में हिन्दी भाषा का महत्त्व', 'चटोरन' आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं रुचिकर हैं।पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन

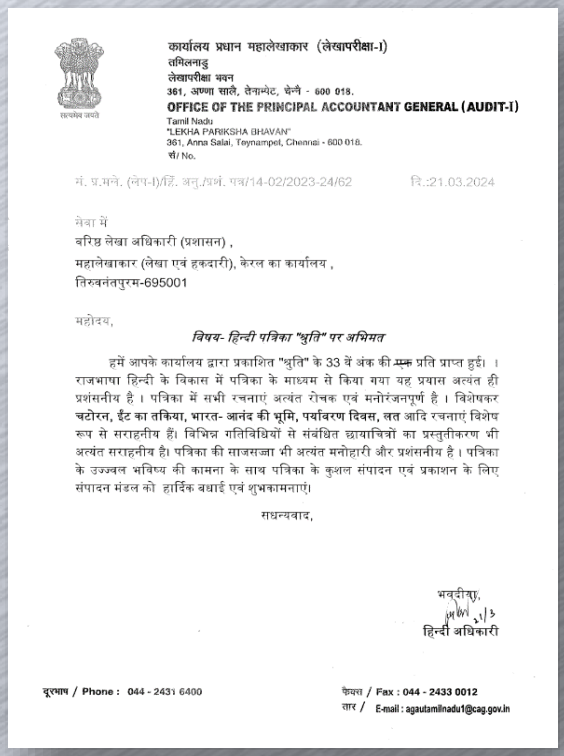

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
तमिलनाडु
लेखापरीक्षा भवन
361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट, चेन्नै - 600 018.
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I)
Tamil Nadu
"LEKHA PARIKSHA (BHAVAN"
361, Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018.
सं/ No.

सं. प्र.महे. (लेप-I)/हिं. अनु./प्रश्नं. पत्र/14-02/2023-24/62 दि.:21.03.2024

सेवा में
वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन) ,
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय ,
तिरुवनंतपुरम-695001

महोदय,

विषय- हिन्दी पत्रिका "श्रुति" पर अभिमत

हमें आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित "श्रुति" के 33 वें अंक की ~~प्रत~~ प्रति प्राप्त हुई। । राजभाषा हिन्दी के विकास में पत्रिका के माध्यम से किया गया यह प्रयास अत्यंत ही प्रशंसनीय है । पत्रिका में सभी रचनाएं अत्यंत रोचक एवं मनोरंजनपूर्ण है । विशेषकर चटोरन, ईंट का तकिया, भारत- आनंद की भूमि, पर्यावरण दिवस, लत आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय हैं। विभिन्न गतिविधियों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण भी अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका की साजसज्जा भी अत्यंत मनोहारी और प्रशंसनीय है । पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादन मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सधन्यवाद,

भवदीय,
हिन्दी अधिकारी

दूरभाष / Phone : 044 - 2431 6400
फैक्स / Fax : 044 - 2433 0012
तार / E-mail : agautamilnadu1@cag.gov.in

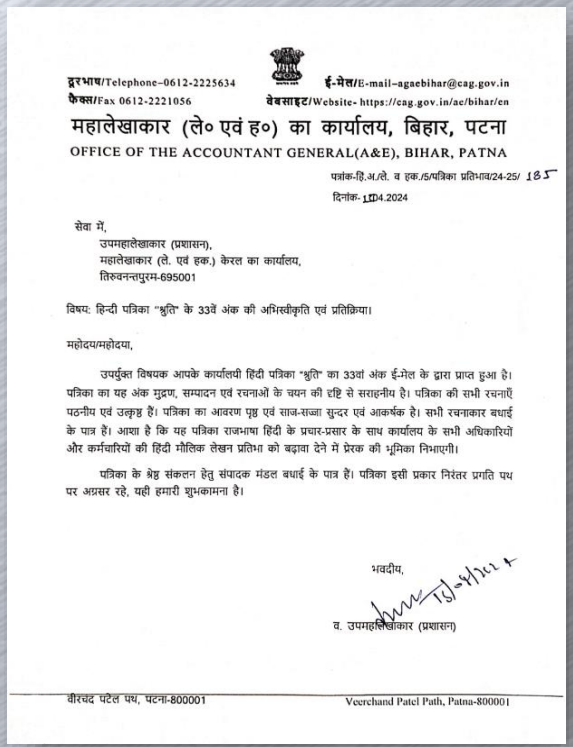

दूरभाष/Telephone–0612-2225634 **ई-मेल**/E-mail–agaebihar@cag.gov.in
फैक्स/Fax 0612-2221056 **वेबसाइट**/Website- https://cag.gov.in/ac/bihar/en

महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL(A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक-हि.अ./ले. व हक./पत्रिका प्रतिभाव/24-25/ 185
दिनांक- 11.04.2024

सेवा में,
उपमहालेखाकार (प्रशासन),
महालेखाकार (ले. एवं हक.) केरल का कार्यालय,
तिरुवनन्तपुरम-695001

विषय: हिन्दी पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालयी हिंदी पत्रिका "श्रुति" का 33वां अंक ई-मेल के द्वारा प्राप्त हुआ है। पत्रिका का यह अंक मुद्रण, सम्पादन एवं रचनाओं के चयन की दृष्टि से सराहनीय है। पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा सुन्दर एवं आकर्षक है। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की हिंदी मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यही हमारी शुभकामना है।

भवदीय,
13/04/24
व. उपमहालेखाकार (प्रशासन)

वीरचंद पटेल पथ, पटना-800001 Veerchand Patel Path, Patna-800001

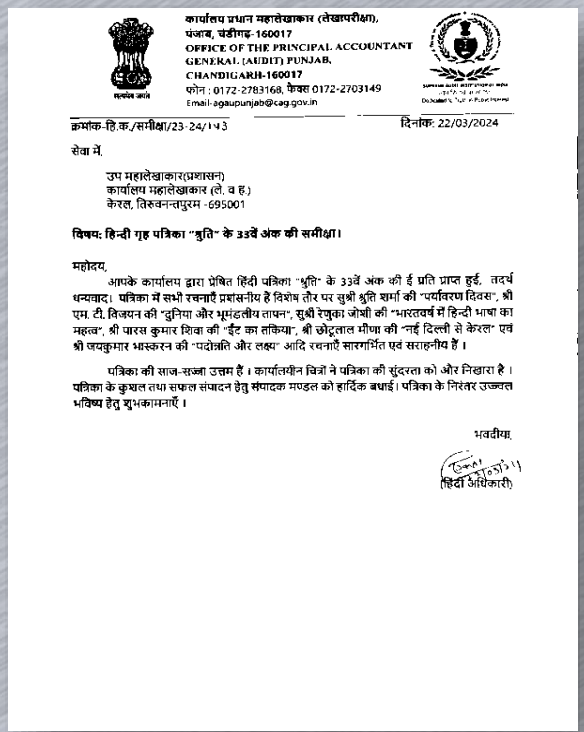

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB,
CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149
Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक-हि.क./समीक्षा/23-24/143 दिनांक: 22/03/2024

सेवा में,

उप महालेखाकार(प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.)
केरल, तिरुवनन्तपुरम -695001

विषय: हिन्दी गृह पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की समीक्षा।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "श्रुति" के 33वें अंक की ई प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर सुश्री श्रुति शर्मा की "पर्यावरण दिवस", श्री एम. टी. विजयन की "दुनिया और भूमंडलीय तापन", सुश्री रेणुका जोशी की "भारतवर्ष में हिन्दी भाषा का महत्व", श्री पारस कुमार शिवा की "ईंट का तकिया", श्री छोटूलाल मीणा की "नई दिल्ली से केरल" एवं श्री जयकुमार भास्करन की "पदोन्नति और लक्ष्य" आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं । कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है । पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ ।

भवदीय,
(हिंदी अधिकारी)

तृतीय ऑडिट दिवस

भारत की महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी द्वारा 16 नवंबर 2023 को भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली में तीसरे लेखापरीक्षा दिवस समारोह का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर बोलते हुए, राष्ट्रपति महोदया ने कहा कि भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक के नेतृत्व में, सरकार के लेखापरीक्षा समुदाय ने अखंडता, शासन और प्रणाली निर्माण को मजबूत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

राष्ट्रपति महोदया ने कहा कि भारत के लोग वर्ष 2047 तक एक विकसित भारत के निर्माण की दिशा में तेजी से आगे बढ़ना चाहते हैं। सीएजी सहित देश के सभी महत्वपूर्ण संस्थानों और समुदायों को इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए योगदान करना होगा। उन्होंने सीएजी द्वारा उठाई गई कई दूरदर्शी कार्रवाइयों की सराहना की, जिसमें सेंटर फॉर डेटा मैनेजमेंट एंड एनालिटिक्स की स्थापना भी शामिल है, जिसमें भविष्य के अनुरूप डिजिटल प्रौद्योगिकी और अन्य आधुनिक तरीकों का उपयोग किया जा रहा है। राष्ट्रपति महोदया ने कहा कि सीएजी की पूरी टीम से एक नियंत्रक और एक परीक्षक के रूप में योगदान की अपेक्षा की जाती है, जो देश की विकास यात्रा में एक साथी और एक मार्गदर्शक दोनों है। उन्होंने कहा कि भारत को दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनाने में सीएजी टीम की अहम भूमिका होगी। वैश्विक प्रतिस्पर्धा की विशेषता वाली आज की बाजार प्रणाली का प्रभाव सभी संस्थाओं और उद्यमों के लिए प्रासंगिक है। देश के सभी उद्यमों और गतिविधियों में नैतिकता के आधार पर

प्रतिस्पर्धा करने की क्षमता लगातार बढ़नी चाहिए। वित्तीय औचित्य और वैधता सुनिश्चित करते हुए त्वरित वृद्धि और विकास के राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधाओं को दूर करना सीएजी सहित सुशासन के लिए जिम्मेदार प्रत्येक संस्थान और व्यक्ति के प्रभावी योगदान की कसौटी है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि लेखापरीक्षकों को सुशासन के सूत्रधार के रूप में माना जाना चाहिए, न कि आलोचकों के रूप में। उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा मार्गदर्शक माना जाना चाहिए जिनकी संवीक्षा हमें सही रास्ते पर चलना सिखाती है। विश्व समुदाय में भारत की अग्रणी स्थिति लेखापरीक्षा के क्षेत्र में भी दिखाई देती है। सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था 20 (एसएआई 20) की अध्यक्षता के दौरान ब्लू इकोनॉमी और रिस्पॉन्सिबल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मुद्दों पर जोर दिया जाना भविष्य के लिए रोडमैप तैयार करने के लिए अच्छा प्रयास है। उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि सीएएजी अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

समारोह में बोलते हुए **भारत के आदरणीय नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चंद्र मुर्मु जी** ने इस बात पर जोर दिया कि राष्ट्र और उसके नागरिकों के कल्याण के प्रति सीएजी की प्रतिबद्धता अपने उद्देश्य पर दृढ़ है। "हमारी संस्था सार्वजनिक वित्तीय जवाबदेही की आधारशिला है। सीएजी संस्था ने कई मोर्चों पर महत्वपूर्ण प्रगति की है।" संस्था की उपलब्धि पर विचार करते हुए उन्होंने कहा, "लेखापरीक्षा रिपोर्ट सुशासन को उत्प्रेरित करती है और संसद और राज्य विधानसभाओं को जवाबदेही, पारदर्शिता और कार्यपालिका का कुशल कामकाज सुनिश्चित करने में सहायता करती है। संगठन के ठोस प्रयासों के परिणामस्वरूप 2022-23 के दौरान संसद और राज्य विधानसभाओं में 183 लेखापरीक्षा रिपोर्टें पेश की गई। राज्य सरकार की वित्तीय प्रणालियों के साथ एसएआई (साई) लेखा कार्यालयों के एकीकरण से वित्तीय डेटा तक पहुंच में काफी सुधार हुआ है।" उन्होंने आगे कहा, "हम वित्तीय विश्लेषण के लिए डेटा विश्लेषण क्षमताओं को विकसित करके लेखा और लेखापरीक्षा के बीच की कडी को मजबूत करना जारी रखेंगे। जब भारत अपनी आजादी का 75वां वर्षगांठ मना रहा है, सीएजी का ध्यान स्थानीय शासन के निर्माण और जमीनी स्तर के लोकतंत्र को मजबूत करने पर केंद्रित रहा है। हम स्थानीय सरकारी लेखापरीक्षा और क्षमता निर्माण के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय केंद्र स्थापित कर रहे हैं। अपनी तरह का यह पहला संस्थान स्थानीय प्रशासन लेखापरीक्षा के संबंध में क्षमता निर्माण की वैश्विक आवश्यकता को पूरा करने के लिए विशेष रूप से समर्पित होगा। नगर पालिकाओं और पंचायतों में योग्य लेखाकारों की कमी की समस्या का समाधान करने के लिए सर्टिफिकेशन कोर्स चलाने के लिए सीएजी और इंस्टीट्यूट ऑफ

चार्टर्ड अकाउंटेंट्स (आईसीएआई) के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया है। यह कौशल विकास पहल स्थानीय सरकारों को समय पर अपने लेखे तैयार करने और वित्त आयोग के अन्य मानदंड पूरा करने पर स्वीकार्य होने वाले निष्पादन अनुदान प्राप्त करने में मदद करेगी।" सतत विकास पर, श्री मुर्मू जी ने कहा: "स्थिरता के प्रति हमारी प्रतिबद्धता सरकारी लेखा मानक सलाहकार बोर्ड (गसब) और एसएआई इंडिया के कार्यालयों के मार्गदर्शन में राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों के खनिज और ऊर्जा संसाधनों पर परिसंपत्ति लेखे सफलतापूर्वक तैयार करने से प्रमाणित होती है। जल संसाधन अगली प्राथमिकता वाला क्षेत्र है। गसब ने पहले ही जल लेखे की संभावित तालिकाएँ विकसित कर ली हैं और उन्हें सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों और अन्य हितधारकों को परिचालित किया है।

तृतीय ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के केरल स्थित क्षेत्रीय कार्यालयों मे 22 से 24 नवंबर 2024 तक विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए।

दिनांक 22.11.2023 को प्रधान कार्यालयों एवं शाखा कार्यालयों के कर्मचारियों एवं उनके बच्चों के लिए विभिन्न **प्रतियोगिताएँ** आयोजित की गई।

दिनांक 23.11.2023 को पूर्वाह्न 6.30 बजे तिरुवनंतपुरम में **साइकिल रैली** आयोजित की गई। केरल सरकार के मुख्य सचिव श्री एस जयतिलक, आईएएस द्वारा साइकिल रैली का फ्लैग ऑफ किया गया। इस अवसर पर श्री एस सुनील राज, आईएएएस, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, आईएएएस, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) और समूह अधिकारीगण उपस्थित रहे।

दिनांक 24.11.2024 को समापन समारोह आयोजित किया गया। पूर्वाह्न 10.00 बजे श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वारा कार्यालय परिसर के **नवीनीकृत शिशुगृह का उद्घाटन** किया गया। इस अवसर पर श्री एस सुनील राज, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) भी उपस्थित रहे।

पूर्वाह्न 10.30 बजे पैनल चर्चा आयोजित की गई, जिसका विषय था – **"स्थानीय स्वशासित संस्थाओं द्वारा परियोजना कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ"**। श्री एस सुनील राज, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) इस चर्चा के मॉडरेटर रहें। श्रीमती पी पी दिव्या, अध्यक्षा, कण्णूर जिला पंचायत; श्री एस एस विजयानंद, आईएएस, सेवानिवृत्त मुख्य सचिव, केरल सरकार; सुश्री शर्मिला मेरी जोसफ, आईएएस, प्रधान सचिव, स्थानीय स्वशासन विभाग, केरल सरकार; प्रो. बिजु पी एलेक्स, सदस्य, केरल राज्य प्लैनिंग बोर्ड; श्री विजु मोहन, अध्यक्ष, आर्यनाड ग्राम पंचायत आदि की उपस्थिति एवं विचार-विमर्श ने इस पैनल चर्चा को सार्थक किया। इस कार्यक्रम के श्रोतागण में श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), समूह अधिकारीगण एवं कर्मचारी गण शामिल थे।

अपराह्न 03.30 बजे से सार्वजनिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। **माननीय विधायक एवं लोक लेखा समिति के अध्यक्ष श्री सण्णी जोसफ** द्वारा इस कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। श्री एस सुनील राज, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) द्वारा सभा को संबोधित किया गया। इस अवसर पर ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को रस्कार प्रदान किए गए। बैठक के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

कराटे का जन्मस्थान जापान नहीं, बल्कि ओकिनावा है

शाश्वत सागर
वरिष्ठ लेखाकार

वर्ष था 1926-1927, जापान के मुख्य भू-भाग टोक्यो का एक आम दिन था। छात्र कराटे डोजो (स्कूल) में कराटे का अभ्यास कर रहे थे। महान सेंसेई (मास्टर) वहाँ बैठकर छात्रों की ओर ध्यान से देख रहे थे और उनकी मुद्राएं और तकनीक सुधार रहे थे। अचानक एक हृष्ट-पुष्ट आदमी ने डोजो में प्रवेश करते हुए गर्व से कहा "चलो लड़ते हैं" और काके दमाशी (दूसरे कराटेका को चुनौती देने वाले हाथ के इशारे) की स्थिति में हाथ क्रॉस कर लिया। महान सेंसेई ने चुनौती स्वीकार कर ली और अगले ही पल उन्हें जमीन पर फेंक दिया गया, महान सेंसेई कूद गए और कामे ते (लड़ाई की मुद्रा) ले ली और "फिर से" बोला और फिर वही हुआ, सेंसेई एक बार फिर खड़े हो गए और तीसरी बार भी उन्हें पहले की तरह ही जमीन पर फेंक दिया गया। इस बार इससे पहले कि महान सेंसेई जमीन से उठते, दूसरा आदमी डोजो छोड़कर चला गया और महान सेंसेई अपने छात्रों के सामने काफी अपमानित हुए। उस दिन के बाद से महान सेंसेई (गिचिन फुनाकोशी), जो आधुनिक कराटे के पिता के रूप में जाने जाते थे, जब भी मोटोबू चोकी नाम सुनते तो क्रोधित हो जाते थे। उनको हराने वाला, महान ओकिनावा कराटे मास्टर मोटोबू चोकी 20 साल की उम्र से अपराजित था और उन्होंने एक सार्वजनिक मैच में एक बहुत बड़े पश्चिमी मुक्केबाज को हराया था।

मोटोबू चोकी (1870-1944) शाही परिवार से थे, लेकिन परिवार का तीसरा बेटा होने के कारण उन्हें उपेक्षित किया गया था, इसलिए वे हिंसक हो गए और हमेशा झगड़ों में शामिल रहते थे। उन्होंने अपने भाई चोई मोटोबू के साथ अंको इटोसु के पास प्रशिक्षण लिया, लेकिन अपने भाई की कद-काठी की वजह से वे अपने भाई से हारते रहे। चूंकि उनका लक्ष्य मजबूत बनना और कराटे का

अधिक व्यावहारिक अनुप्रयोग था, इसलिए वे सोकोनबुशी मात्सुमुरा (जो ओकिनावान कराटे के पिता के रूप में जाने जाते हैं) नामक एक अन्य शिक्षक के पास गए, जहां उनका कराटे पूर्णता को प्राप्त हुआ। जैसा कि उन्होंने अपनी पुस्तक में लिखा है, 20 वर्ष की आयु से लेकर उनकी मृत्यु तक उन्हें कभी पराजित नहीं किया जा सका था। ओकिनावा में अपने पारिवारिक व्यवसाय में विफल होने के बाद वे जापान चले गए। उन्होंने मुख्य भूमि जापान में कराटे सिखाने की कोशिश की लेकिन अपने ओकिनावा उच्चारण के कारण वे अधिकांश जापानी छात्रों के साथ संवाद नहीं कर सके। उनकी मुख्य शिक्षण प्रणाली बुनियादी हरकत (किहोन) और मुक्केबाजी (कुमाइट) थे। वे किसी भी अन्य कराटे मास्टर की तुलना में मजबूत थे और अपनी आखिरी सांस तक सुंदर शैली के बजाय व्यावहारिक कराटे शैली में विश्वास करते थे।

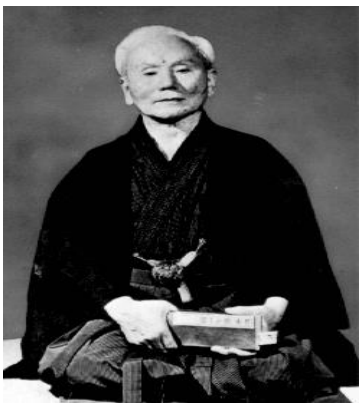

आधुनिक कराटे के जनक और विश्व प्रसिद्ध शोटो कान कराटे शैली के संस्थापक गिचिन फुनाकोशी (1868-1957), ओ'सेंसेई के नाम से जाने जाते हैं। उनका जन्म ओकिनावा शूरी जिले में एक अभिजात वर्ग के टोमिनोकोशी परिवार में हुआ था, जिसे पेइचिन/पेकुमी (ओकिनावा अभिजात वर्ग में रैंक) के नाम से जाना जाता था। चूंकि वे समय से पूर्व जन्मा बच्चा था, इसलिए कमजोर और बीमार रहते थे। 11 साल की उम्र में उन्होंने ओकिनाव के राजा के सैन्य प्रमुख यासुत्सुने अज़ातो सेंसेई के पास शूरी कराटे सीखना शुरू किया। ओकिनावा में उस समय सैन्य उद्देश्यों के अलावा कराटे सीखना मना किया गया था, इसलिए यासुत्सुने अज़ातो सेंसेई ने गिचिन फुनाकोशी को आगे के प्रशिक्षण के लिए अपने दोस्त अंको इटोसु के पास भेजा। 1917 में उन्हें कराटे के प्रदर्शन के लिए जापान से निमंत्रण मिला। जापान के कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने इस प्रदर्शन की प्रशंसा की। 1921 में जापानी राजकुमार जब शूरी महल में आए तो उन्होंने गिचिन फुनाकोशी का अपने छात्रों के साथ प्रदर्शन देखा और उन्हें मुख्य भूमि जापान में आमंत्रित किया। उन्होंने जूडो के संस्थापक जिगोरो कनोह की मदद से टोक्यो में कराटे का स्कूल स्थापित किया। वे इस दर्शन में विश्वास करते थे कि 'कराटे डो' हत्या के लिए बनी कला नहीं है'।

दुनिया भर में प्रसिद्ध युद्ध कला कराटे की उत्पत्ति अभी भी एक रहस्य है और इंटरनेट के माध्यम से हम केवल कुछ पूर्वाग्रही/अधूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कराटे का जन्म जापान में कभी नहीं हुआ, इसका जन्मस्थान ओकिनावा नामक एक प्रांत था.... हाँ आपने सही पढ़ा.... ओकिनावा दो सौ साल पहले 1879 में एक अलग देश था जब जापान ने ओकिनावा पर आक्रमण किया और रियूक्यू द्वीप पर कब्जा कर लिया। शुरुआत में कराटे की तीन शैलियाँ थीं - 1. शूरी ते, 2. नाहा ते और 3. तोमरी ते, शूरी ते इन सभी में सबसे पुराना था। 'ते' का अर्थ है हाथ और

'कारा' का अर्थ है खाली, साथ में कराटे का अर्थ खाली हाथ है। ऐसे ही शूरी ते का अर्थ है शूरी हाथ, शूरी ओकिनावा में नाहा नामक प्रांत में स्थित एक जिला शहर है, जो रियूक्यू साम्राज्य की राजधानी थी। प्रसिद्ध शूरी महल यहाँ स्थित है, जो 31 अक्टूबर 2019 में जल गया था। यह शूरी महल वह जगह है जहाँ कराटे की सबसे पुरानी शैली शूरी ते का जन्म हुआ था।

वर्ष 1429 में तीन साम्राज्यों ने मिलकर रियूक्यू नामक साम्राज्य की स्थापना की। 1477 में शोगुन (सम्राट) शो शिन सत्ता में आए और उन्होंने कराटे और कोबुडो (हथियार रूप) पर प्रतिबंध लगा दिया। प्रतिबंध तब तक लागू रहा जब तोकुगावा शोगुनेट (तोकुगावा साम्राज्य) ने वर्ष 1609 में रयू-क्यू साम्राज्य पर हमला किया था। 1800 सदी में तोडे-सकुगावा के हाथों कराटे फिर से विकसित होने लगा। तोडे-सकुगावा का जन्म 5 मार्च, 1733 को हुआ था। उन्होंने चीनी केनपो सीखा, केन का मतलब मुट्ठी और पो का मतलब कानून/विधि। केनपो का दूसरा नाम महान कुशांकु सेंसेई (शिक्षक) से तोडे (चीनी हाथ) पड़ा। सकुगवा ने पहले ताकाहारा पेइचिन सेंसेई से सीखा लेकिन कुशांकु सेंसेई के शिक्षण ने ज्ञान प्राप्त करने की उसकी यात्रा पूरी की। कई कराटे इतिहासकारों ने कहा है कि चतन्यारा सेंसेई कुशांकु सेंसेई के छात्र थे और ताकहारा पेइचिन सेंसेई चतन्यारा सेंसेई के छात्र थे। तोडे सकुगावा का सबसे पसंदीदा छात्र सोकोनबुशी मात्सुमुरा (1809-1899) था, जो ओकिनावा कराटे के जनक के रूप में जाना जाता था, जो अपने जीवन काल में शो राजवंश के लगातार तीन राजाओं के अंगरक्षक थे। पहला राजा शो-को, दूसरा राजा शो-इकु, तीसरा राजा शो-ताई। सोकोनबुशी मात्सुमुरा अपनी मृत्यु तक एक कुशल युद्ध कलाकार थे। तोडे सकुगावा का दूसरा पसंदीदा छात्र इटोसु रयू कराटे के संस्थापक अंको इटोसु (1831-1915) थे, जो 1905 में कराटे को स्कूली पाठ्यक्रम के रूप में पेश करने के लिए जिम्मेदार थे। उन्होंने 1908 में शिक्षा विभाग और युद्ध मंत्रालय को पत्र लिखे, जिनमें उन्होंने कराटे के प्रसिद्ध दस परसेप्ट्स का वर्णन किया। वर्ष 1929 में चोसिन चिबाना, जो अंको इटोसु के प्रसिद्ध छात्र थे, ने पहला और शुद्ध शूरी कराटे स्कूल शोरिन-रयु बनाया। यह विशेष स्कूल कई अन्य स्कूलों का प्रणेता है, जैसे कि शोटो कैन, शितो रियू, वाडो रियू, जो मुख्य भूमि जापान में विकसित हुए। चीनी व्हाइट फ़ुज़ियान क्रेन शैली कुंग फू भी हकुत्सुरु और शूरी कराटे पर काफी प्रभाव डाल रहा है।

आधुनिक समय में, ओकिनावा में शूरी-ते के प्रसिद्ध स्कूल हैं, जो अभी भी शुद्ध ओकिनावा कराटे की विरासत को आगे बढ़ा रहे हैं, जैसे कि शोरिन-रियू शुबुकन (शूरी कराटे, कोबुडो, होजोनकाई), ग्रैंड मास्टर याशुहिरो

यूएमा और निदेशक, ताकेशी यूएमा, शोरिन-रयु शाबू कान ग्रैंड मास्टर, ज्यू जिबो, शोरिन-र्यु सेइबुकन ग्रैंड मास्टर, ज़ेनपो शिमाबुकुरो और कई अन्य सम्मानित शूरी ते स्कूल।

संदर्भ दस्तावेज़ :

विकिपीडिया, इंटरनेट, ओकिनावा कराटे का इतिहास, सेंसेई सब्यसाची गिरी का ब्लॉग और शूरी कराटे (शोरिन-रियू सेइबुकन) के छात्र के रूप में स्वतः अनुसंधान।

आधुनिक हिंदी साहित्य की महान विभूति - सुभद्रा कुमारी चौहान

हिंदी प्रदेशों के नवजागरण और सुधार युग को सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने रचना कर्म से जन-मन तक पहुँचाने का काम निर्भयता से किया था। उन्होंने झांसी की रानी, वीरों का कैसा हो वसंत जैसी अमर और सदाबहार कविताओं के माध्यम से स्वतंत्रता के महत्व को व्यक्त किया। देशभक्ति की निर्भीक अभिव्ययक्ति से साहित्य और राजनीति में खास जगह बनाने वाली सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त, 1904 को निहालपुर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश में हुआ था।

सुभद्रा जी की राष्ट्रीय कविताओं से प्रेरित होकर राष्ट्रकवि रामधारी सिंह "दिनकर" भी उनके जैसा बनना चाहते थे। सुभद्रा की रचनाशीलता का आरंभ 9 साल की बाल्यावस्था में ही हो गया था, जब उन्होंने 'नीम' शीर्षक कविता की रचना की थी।

इनकी रचनाएँ इस प्रकार हैं –

कविता संकलन	मुकुल, नक्षत्र, त्रिधारा, सभा का खेल
कहानी संग्रह	बिखरे मोती, उन्मादिनी, सीधे-सीधे चित्र

15 फरवरी, 1948 को बसंत पंचमी के दिन एक मोटर दुर्घटना में उनकी मृत्यु हुई।

(राजभाषा विभाग की वेबसाइट में प्रकाशित)

गरीबी का स्तुतिगान

पारस कुमार शिवा
सहायक लेखा अधिकारी

भारत में यह कोई नई बात नहीं है कि दरिद्र का सम्मान हो और धनी या संपन्न व्यक्तियों को तिरस्कार की नजर से देखा गया हो। प्राचीन भारत में बुद्ध-महावीर के समय से भी यही होता आया है परंतु हम अकसर उस समय के अन्य पहलूओं को भूल जाते हैं जैसे कि भारत उस समय एक बहुत संपन्न देश था परंतु धीरे-धीरे यह गुलामी की चपेट में आकर कमजोर और गरीब होता गया। यह सब होने के बाद भी हमारे मन से दरिद्रता के प्रति सम्मान नहीं गया।

हम यह भूल जाते हैं कि जिस काल में उपनिषद् लिखे गए वह भारत का स्वर्ण काल था। भौतिक रूप से उस समय भारत के पास सब था तभी उस समय कला, साहित्य, ज्ञान एवं दर्शनशास्त्र में इतनी उन्नति हो सकी। सत्य यही है कि जब एक समाज भौतिक रूप से संपन्न हो तभी वह सत्य एवं धर्म के बारे में विचार कर सकता है, कोई व्यक्ति गरीबी में रहकर भी विचारशील हो सकता है, पर पूरा समाज नहीं।

भारतीय संस्कृति में भी भगवान नारायण की पत्नी को माता लक्ष्मी के रूप में दिखाया गया है जो संकेत देता है कि लक्ष्मी हो तो ही नारायण तक जाने का मार्ग सुगम हो सकता है।

भारत में गरीबी को बढ़ावा देने में भारतीय राजनीतिज्ञों का भी हाथ है जो गरीबी को आध्यात्मिकता से जोड़ते हैं जबकि आम तौर पर गरीब आदमी के पास इतना समय और जीवन शक्ति ही नहीं बचती कि वह रोटी, कपड़ा और मकान से ऊपर उठकर कुछ सोच सके। गरीब घर से भी आध्यात्म या विचार के जगत में महान प्रतिभा का जन्म हो सकता है परंतु वह अकसर अपवाद होता है। हिंदू धर्म में भी संसार के भौतिकवाद को छोड़कर संन्यास लेने का संस्कार अंतिम होता है, जब मनुष्य संसार को अच्छी तरह जी चुका होता है। राजनीतिज्ञों ने गरीबी की प्रशंसा करके भारत के जनसामान्य को हानि ही पहुंचाई है।

अतः हमारे मन में गरीबों के प्रति सहानुभूति होनी चाहिए, गरीबी के प्रति नहीं। गरीबी को मिटाना ही हमारा प्रयास होना चाहिए तभी हम कला, साहित्य, खेल, दर्शन एवं अन्य क्षेत्रों में अग्रसर होंगे अन्यथा हम रोटी, कपड़ा, मकान, सड़क व बिजली-पानी जैसी बुनियादी जरूरतों में ही फंसे रह जाएंगे।

भक्त शिरोमणि – मीराबाई

रेणुका जोशी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भारत वर्ष में प्रारंभ से ही भक्ति का बहुत महत्व रहा है। भारत वर्ष संत महात्माओं की भूमि रही है। ऐसे अनेकों संत हुए हैं, जिन्होने भक्ति में लीन होकर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। ऐसी ही एक अनन्य भक्त – भक्त शिरोमणि मीराबाई थी। मीराबाई कृष्ण भक्त थीं। उनकी कहानियां सुनकर राजस्थान की धरती आज भी गौरवान्वित होती है। भगवान श्री कृष्ण के भक्तों में मीराबाई का सर्वोच्च स्थान है। मीराबाई ने स्वयं को पूरी तरह से कृष्ण भक्ति में लीन कर लिया था। प्रत्येक वर्ष अश्विन मास की शरद पूर्णिमा के दिन मीराबाई की जयंती मनाई जाती है। मीराबाई जोधपुर, राजस्थान के मेड़ता कुल की राजकुमारी थीं। वैसे तो इनके जन्म समय का कोई पुख्ता प्रमाण नहीं मिलता है, लेकिन कुछ मान्यताओं के अनुसार कहा जाता है कि मीराबाई का जन्म सन 1498 ई॰ में पाली के कुड़की गांव में दूदा जी के चौथे पुत्र रतन सिंह के घर हुआ। ये अपने पिता रतन सिंह की एकमात्र संतान थीं। वे बचपन से ही कृष्णभक्ति में रुचि लेने लगी थीं। वे अपने पूरे जीवन काल में भगवान कृष्ण की भक्ति करती रहीं।

एक मान्यता के अनुसार कहा जाता है कि मीराबाई जब बाल्यावस्था में थीं, तब उनके पड़ोस में किसी धनवान व्यक्ति के यहां बारात आई थी। सभी स्त्रियां छत पर खड़ी होकर बारात देख रही थीं। वे भी बारात देखने के लिए छत पर आ गई। बारात को देख मीरा ने अपनी माता से पूछा कि मेरा दूल्हा कौन है, इस पर उनकी माता ने उपहास में ही भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति की तरफ इशारा करते हुए कह दिया कि यही तुम्हारे पति हैं, यह बात मीराबाई के मन में एक गांठ की तरह समा गई और वे कृष्ण को ही अपना पति मानने लगीं। मीराबाई ने बचपन से ही अपने मन में कृष्ण की छवि को बसा लिया था और जीवनभर उन्हें ही अपना सब कुछ मानकर उनकी भक्ति में लीन रहीं। मीराबाई ने कृष्ण को ही अपने पति के रूप में स्वीकार लिया था, इसलिए वे विवाह भी नहीं करना चाहती थी।

हालांकि उनकी इच्छा के विरुद्ध मेवाड़ के सिसोदिया राज परिवार में महाराणा सांगा के पुत्र, चित्तौड़गढ़ के महाराजा भोजराज के साथ उनका विवाह कर दिया गया।

उनके पति सन् 1518 में दिल्ली सल्तनत के साथ चल रहे युद्धों में से एक में घायल हो गए थे और 1521 में युद्ध के घावों से उनकी मृत्यु हो गई। 1527 में खानवा के युद्ध में बाबर, पहले मुग़ल सम्राट के खिलाफ उनकी हार के कुछ दिनों बाद उनके पिता और ससुर (राणा सांगा) दोनों की मृत्यु हो गई। पति की मृत्यु के बाद उन्हें पति के साथ सती करने का प्रयास किया गया, किन्तु मीरा इसके लिए तैयार नहीं हुईं। मीरा के पति का अंतिम संस्कार चित्तौड़ में मीरा की अनुपस्थिति में हुआ। पति की मृत्यु पर भी मीरा माता ने अपना श्रृंगार नहीं उतारा, क्योंकि वे गिरधर को अपना पति मानती थीं।

तत्पश्चात उन्होंने अपना पूरा जीवन कृष्ण भक्ति में समर्पित कर दिया। वे विरक्त हो गईं और साधु-संतों की संगति में हरि कीर्तन करते हुए अपना समय व्यतीत करने लगीं। पति के परलोकवास के बाद उनकी भक्ति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गई। वे मंदिरों में जाकर वहाँ मौजूद कृष्णभक्तों के सामने भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति के आगे नाचती रहती थीं। मीराबाई का कृष्णभक्ति में नाचना और गाना राज परिवार को अच्छा नहीं लगा। राणा सांगा की मृत्यु के बाद राणा विक्रम सिंह मेवाड़ के शासक बने।

एक लोकप्रिय किंवदंती के अनुसार, उनके ससुराल वालों ने कई बार उनकी हत्या करने की कोशिश की। एक बार आभूषणों की टोकरी में राणा ने उनके पास साँप भिजवाया, परंतु श्रीकृष्ण की भक्त पर उस विष का कोई असर नहीं हुआ। कहते हैं कि राणा ने दासी के हाथ उनके पास विष का कटोरा यह बताकर भिजवाया कि यह श्रीकृष्ण का प्रसाद है, मीराबाई ने पूरा विष पी लिया परन्तु उन पर उसका कोई असर नहीं हुआ। इस तरह के व्यवहार से परेशान होकर मीरा द्वारका और वृंदावन चली गई। अपने जीवन के अंतिम वर्ष भी उन्होंने वहीं व्यतीत किए।

प्रचलित किंवदंतियों के अनुसार सन् 1547 में मीराबाई भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति के सामने भजन गाकर नाचते हुए उसी में विलीन हो गईं। मीराबाई निर्गुण व सगुण भक्ति की प्रचारक बनीं तथा भक्ति आंदोलन के काल में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके लिखे भक्ति गीतों को पदावली कहा जाता है। उनकी सबसे लोकप्रिय रचना है "पायो जी मैनें राम रतन धन पायो"।

आज भी राजस्थान तथा संपूर्ण भारतभूमि में मीराबाई के भजनों को जनमानस द्वारा गाया जाता है। निश्चित ही, भगवान श्रीकृष्ण के भक्तों में मीराबाई का नाम सबसे पहले लिया जाता है। चित्तौड़गढ़ में मीराबाई का मंदिर बना है तथा चित्तौड़ के जिस मंदिर में कृष्ण की मूर्ति के सामने बैठकर वे अराधना करती थीं, वह मूर्ति वर्तमान में जयपुर के जगत शिरोमणि मंदिर में प्रतिस्थापित है। भक्त शिरोमणि मीराबाई के चरणों में शत्-शत् नमन।

वर्ष 2022-2023 के दौरान मूल कार्य हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना के तहत पुरस्कार प्राप्त अधिकारी

द्वितीय पुरस्कार

श्रीमती आर कमला

सहायक लेखा अधिकारी

तृतीय पुरस्कार

श्रीमती आर विजया

सहायक लेखा अधिकारी

वर्ष 2024 में सेवानिवृत्त होने वाले अधिकारियों के लाभ के लिए कल्याण अनुभाग द्वारा दिनांक 21.08.2023 को आयोजित सेवानिवृत्ति-पूर्व परामर्श पाठ्यक्रम के सहभागी

परिवार का सहारा

सिंधु सी सी
सहायक लेखा अधिकारी

पिता, परिवार के एक महत्वपूर्ण सदस्य होते हैं। उनका योगदान और महत्व समाज में अत्यंत उच्च होता है। वे परिवार की सुरक्षा, संरक्षण और स्थिरता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं। पिता का समर्पण, प्रेम और संबल सदैव परिवार के सदस्यों को प्रेरित करता है और उन्हें जीवन के हर मोड़ पर साथी बनाता है।

पिता का आदर्श संघर्ष और समर्पण होता है। वे अपने परिवार के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार रहते हैं। उनकी मेहनत, उनकी ताकत का रहस्य होती है, जो उन्हें हर संघर्ष से निकलने में सक्षम बनाती है। पिता की बढ़ती उम्र, उनके अनुभव और संघर्षों से भरी जिंदगी और उनकी आदर्शवादिता हर बच्चे के लिए एक सबक है।

पिता का प्रेम और समर्थन बच्चों के लिए अद्वितीय होता है। उनके प्रेम और समर्थन के बिना बच्चों के संघर्ष की दिशा में समर्थन और मार्गदर्शन अधूरा हो जाता है। पिता की शिक्षा, उनकी मेहनत और उनकी संघर्ष भरी कहानी हमेशा बच्चों को प्रेरित करती हैं और उन्हें अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर करती हैं।

पिता का समर्थन और मार्गदर्शन बच्चों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। अपने अनुभव, शिक्षा और विचारों के जरिए वे अपने बच्चों के साथ जीवन के महत्वपूर्ण पल साझा करते हैं और उन्हें सही और सफल निर्णय लेने के लिए प्रेरित करते हैं। पिता की संजीवनी बातें, उनकी गोदी में शांति और उनका प्रेम हर बच्चे के लिए अद्वितीय हैं। वे अपने बच्चों के साथ हर कदम पर खड़े होते हैं, हर संघर्ष में साथी बनाते हैं और हर सपने को पूरा करने में मदद करते हैं।

पिता का संबंध उनके बच्चों के साथ अनूठा और गहरा होता है। उनका प्रेम और सहयोग हमेशा उनके बच्चों के लिए प्रेरणादायक रहता है। पिता की ममता, प्रेम और सहयोग हर बच्चे के लिए अनमोल होता है।

"बाल श्रम: समाज का गहरा दोष"

जिनु अब्राहम
सहायक पर्यवेक्षक

बाल श्रम एक समस्या है जो विश्वभर को गंभीर रूप से प्रभावित कर रही है। यह समस्या विकासशील और विकासहीन देशों, दोनों में प्रचलित है। बाल श्रम का मुख्य कारण गरीबी, आर्थिक अभाव और शिक्षा की कमी होती है। अनेक बच्चे अपने परिवार की आर्थिक सहायता के लिए काम करने को मजबूर होते हैं और इससे उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के अधिकारों का हनन होता है।

बाल श्रम का प्रभाव बेहद नकारात्मक होता है। इससे बच्चों का भविष्य खराब होता है और उन्हें समाज में उचित अवसरों से वंचित कर दिया जाता है। बच्चों से उनकी शिक्षा के अधिकार को हर तरह से छीना जाता है और उन्हें स्कूल नहीं जाने के लिए मजबूर किया जाता है। इसके अलावा, बच्चों के सामाजिक और मानसिक विकास पर भी बुरा असर पड़ता है और वे अपने अधिकारों को जानने और प्रयोग करने में असमर्थ बन जाते हैं।

बाल श्रम को रोकने के लिए सकारात्मक कदम उठाने की आवश्यकता है। सरकारों को बाल श्रम के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई करनी चाहिए और बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए सख़्त कार्रवाई करनी चाहिए। उन्हें गरीब परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए उपाय अपनाने चाहिए ताकि उनके बच्चों को स्कूल भेजने का मौका मिल सके।

इस समस्या के बारे में समाज में जागरूकता फैलाने की भी जरूरत है। सामाजिक संगठनों, शैक्षिक संस्थाओं और सरकारी अधिकारियों को साथ मिलकर इस समस्या के खिलाफ लड़ाई में भाग लेना चाहिए। इस तरह के संघर्ष से ही हम बाल श्रम को समाप्त कर सकते हैं और समाज में न्याय की विजय हो सकती है।

अंततः, बाल श्रम एक गंभीर समस्या है जो समाज के लिए अत्यंत नुकसानदायक है। हमें इस समस्या का सकारात्मक रूप से समाधान करने के लिए साथ मिलकर काम करना चाहिए ताकि हमारे बच्चे सुरक्षित, स्वस्थ्य और शिक्षित हो सकें।

प्रश्नोत्तर

लक्ष्मिप्रिया टी जी
सहायक लेखा अधिकारी

शीर्षक देखकर यह मत सोचिये कि यहाँ किसी प्रश्नोत्तर सत्र का आयोजन किया गया है। यहाँ न कोई प्रश्न पूछें जाएंगे न तो उत्तर मांगे जाएंगे। यहाँ चर्चा होगी जीवन के प्रश्नों और उनके उत्तरों पर। यहाँ हम बात करेंगे उस बड़े चित्र की जिसको जीवन कहते हैं।

इस संसार में हर प्रश्न का उत्तर है। हर समस्या का कोई न कोई समाधान होता है।

एक कहानी सुनिये। एक राक्षस हुआ करता था। उसने कई वर्षों की कठोर तपस्या के बाद यह वरदान प्राप्त किया कि उसे न कोई देवता मार सकता है, न कोई दानव, न कोई मनुष्य और न कोई जानवर। उसका वध न किसी अस्त्र से होगा न शस्त्र से। उसे न कोई दिन में मार सकेगा न ही रात में। उसकी मृत्यु न धरती पर होगा न आकाश में। संक्षिप्त में कहा जाए तो उसने अपने लिए अमरत्व माँग लिया या ऐसा कहें कि ऐसा उसने सोच लिया। वह एक ऐसी समस्या बन गया जिसका कोई समाधान न था, परंतु उसका भी समाधान था और समय आने पर उसका भी वध हुआ।

जैसा कि पहले कहा था, यह कभी मत भूलिये कि अगर ईश्वर ने प्रश्न बनाए हैं तो उनके उत्तर भी बनाए हैं। हमें केवल खोजने की आवश्यकता है। यह खोज हमारे जीवन को जीने के लायक बनाती है। मशहूर रूसी लेखक लियो टाल्स्टाय ने अपनी किताब "अन्ना कैरनीना" में कहा था कि सारे खुशहाल परिवार एक समान होते हैं, मगर प्रत्येक नाखुश परिवार अपने तरीके से नाखुश होते हैं। यही विषम परिस्थितियां हमें एक दूसरे से अलग बनाती हैं। अगर ये न हों तो जीवन नीरस हो जाएगा और हम सब 'सिसिफस' कि तरह एक पत्थर को पहाड़ी के ऊपर नीचे करते रहेंगे।

जीवन की समस्याएँ केवल स्कूल की परीक्षाओं की तरह हैं। हमें इनसे हार मानकर भागना नहीं है, बल्कि उनका सामना कर उनका समाधान खोजना है। तभी हम जीवन में विजयी होकर आगे बढ़ेंगे। हमें नए कार्य सीखने को मिलेंगे। तभी हम बेहतर इंसान बनेंगे।

पृथ्वी पर कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है, जिसकी कोई समस्या न हो और पृथ्वी पर कोई भी ऐसी समस्या नहीं है जिसका कोई समाधान न हो। मंजिल चाहें कितनी भी ऊँची क्यों न हो, रास्ते हमेशा पैरों तले होते हैं। आपकी समस्या का समाधान केवल आपके पास होता है दूसरों के पास तो सिर्फ आपके लिए सुझाव ही होते हैं। जीवन की हर समस्या ट्रैफिक की लाल बत्ती की तरह होती है, यदि हम थोड़ी देर प्रतीक्षा कर लें तो वह हरी हो जाती है, इसलिए धैर्य रखें, प्रयास करें, समय बदलता ही है।

केरल का दिल - एरणाकुलम की एक झलक

आन्ड्रिया लुइस
वरिष्ठ लेखाकार

एरणाकुलम, जिसे अक्सर केरल की वाणिज्यिक राजधानी कहा जाता है, भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर स्थित एक जीवंत शहर है। अरब सागर और पश्चिमी घाटों के बीच स्थित एरणाकुलम समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, परंपरा व आधुनिकता एवं भरी बाजारों का एक सामंजस्यपूर्ण सम्मिश्रण है। चलो, इस आकर्षक शहर को और नजदीक से देखते हैं !

सांस्कृतिक मिलन :

एरणाकुलम वैविध्यपूर्ण संस्कृतियों का मिलन स्थान है, जिसे शताब्दियों के व्यापार और प्रवास ने आकार दिया है। इस शहर में हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई सहित भिन्न-भिन्न धार्मिक व प्रजातीय पृष्ठभूमि के लोग रहते हैं। यह सांस्कृतिक विविधता शहर की वास्तुकला, पाक शैली और त्योहारों में परिलक्षित होती है, जो इसे सच्चे अनुभव की तलाश करने वाले यात्रियों के लिए दिलचस्प जगह बनाती है।

ऐतिहासिक महत्व:

एरणाकुलम शहर का इतिहास प्राचीन काल से संबंधित है, जिसने कई राजवंशों का उत्थान और पतन देखा है, जिसमें चेर, जमोरिन (सामूतिरि) और डच शामिल हैं। इस शहर की रणनीतिक अवस्थिति ने इसे प्रमुख व्यापार केंद्र बनाया और विश्वभर से व्यापारियों को आकर्षित किया। आज पूरे शहर में बिखरे हुए ऐतिहासिक इमारतों, गिरजाघरों और यहूदी मंदिरों के रूप में इसके औपनिवेशिक अतीत के अवशेष देखे जा सकते हैं।

वाणिज्यिक केंद्र:

एरणाकुलम केरल के आर्थिक केंद्र के रूप में कार्य करता है, जहाँ पर्यटन, नौवहन और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे संपन्न उद्योग इसके विकास को गति देते हैं। यह शहर कई व्यवसायों, वित्तीय संस्थानों और व्यापारिक केंद्रों से युक्त है जो इसे इस क्षेत्र का प्रमुख वाणिज्यिक स्थान बनाता है। ब्रॉडवे और एमजी रोड जैसे जाने-माने और भीड़-भाड़ वाले बाजार, विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं की श्रंखला प्रदान करती है, जो दूर-दूर से खरीदारों को आकर्षित करते हैं।

प्राकृतिक सौंदर्य:

इसके शहरी विस्तार के बावजूद, एरणाकुलम को समृद्ध प्राकृतिक सौंदर्य का आशीर्वाद मिला है। यह शहर घनी हरियाली, बैकवॉटर और नारियल के पेड़ों से घिरा हुआ है, जो शहरी जीवन की हलचल से राहत और शांति प्रदान करता है। यात्री शांत बैकवॉटर पर नौका यात्रा करके या तट रेखा पर बिखरे हुए किसी भी निर्मल समुद्र तट पर आराम करते हुए सुरम्य प्राकृतिक छवि निहार सकते हैं।

भोजन और पाक कला

एरणाकुलम की कोई भी यात्रा इसके मुंह में पानी लाने वाले व्यंजनों का आनंद लिए बिना पूर्ण नहीं होती है। शहर के वैविध्यपूर्ण सांस्कृतिक विरासत के प्रभाव के कारण, यहाँ के खाने में विभिन्न जायके और व्यंजनों की लुभावनी शृंखला मिलती है। केरल के पारंपरिक व्यंजन जैसे अप्पम, पुट्टु और मछली करी से लेकर अंतर्राष्ट्रीय व्यंजनों तक, हर स्वाद को संतुष्ट करने के लिए यहाँ कुछ न कुछ होता है। यात्री शहर के खान-पान का आनंद लेने के लिए स्थानीय भोजनालयों, स्ट्रीट फूड स्टॉल और उच्च श्रेणी के रेस्तरां की खोज कर सकते हैं।

गणतंत्र दिवस समारोह 2024 की झलकियाँ

उत्कृष्ट सेवा के लिए श्री एस सुनील राज, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) से पुरस्कार ग्रहण करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी

उत्कृष्ट सेवा के लिए श्री एस सुनील राज, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) से पुरस्कार ग्रहण करते हुए अधिकारी एवं कर्मचारी

बुलबुल

राहुल कुमार
लेखाकार

बुलबुल-बुलबुल तू कहां चली
छोड़ शहर मेरा कहां चली
कोई नया आशियां बुनने को
नए गीत गैरों से सुनने को
आंखों में ख्वाबों की चमक लिए
छोटे शहर की मीठी महक लिए
धूप छांव से लड़ती बढ़ती
बैरी बाजों से लड़ती बढ़ती
छम छम करती बे पायल के
हुई नैनों से ओझल इस पागल के
अब न जाने कब मिलना होगा
हर घाव यादों से सिलना होगा
इक बार हुआ ये नाकाफी है
कह दो मुझको माफी है
अभी और कई मर्तबा झगड़ेंगे
यूं ही कहां हम बिछड़ेंगे
सौ किस्से किस्मत में लिख लेंगे
संग चलेंगे और कब फिसलेंगे
जैसे बच्चों का खेल हो कोई
अपने रिश्ते का न मेल हो कोई

और इक बात ये भी ध्यान रहे
मैं आऊंगा तू चाहे जहां रहे
आखिर इश्क-गुलाब को खिलना होगा
लगे बरसों पर आखिर मिलना होगा
मैं आऊंगा चाहे तू जहां चली
बुलबुल-बुलबुल तू कहां चली

सफर

सफर में साथ हमारे सितारे चल रहे हैं
हम खुद ही अपनी किस्मत संवारे चल रहे हैं
हवा चेहरा छू रही जैसे बिखरे बाल तेरे
हम भी लगे हाथ बाल संवारे चल रहे हैं
गुजरते पेड़ों से तेरा पता पूछता चल रही हूं
वो हंस रहे कि मुझसे आगे ढेर सारे चल रहे हैं
खेतों में हरी दूब और उन पर ओस की बूंदें
गुलदस्ता महंगा है शहर में दूब उखाड़े चल रहे हैं
रेलगाड़ी पुरानी रुक-रुक के बढ़ रही है
सलामत तेरे स्टेशन पहुंचे नजर उतारे चल रहे हैं
पानी और मीठा सा लगा इस प्लेटफॉर्म का
नहाई हो क्या इनमें साथ नहर के जो किनारे चल रहे हैं
दरवाजे पर बैठने से मना किया था अम्मा ने
मैं नहीं मरूंगा तुझे मिले बिना इसी आस के सहारे चल रहे हैं
हंसों, तमगा दो, या पागलपन कहो इसे
वो परदेस है और पांव बेफिक्र उसके द्वारे चल रहे हैं

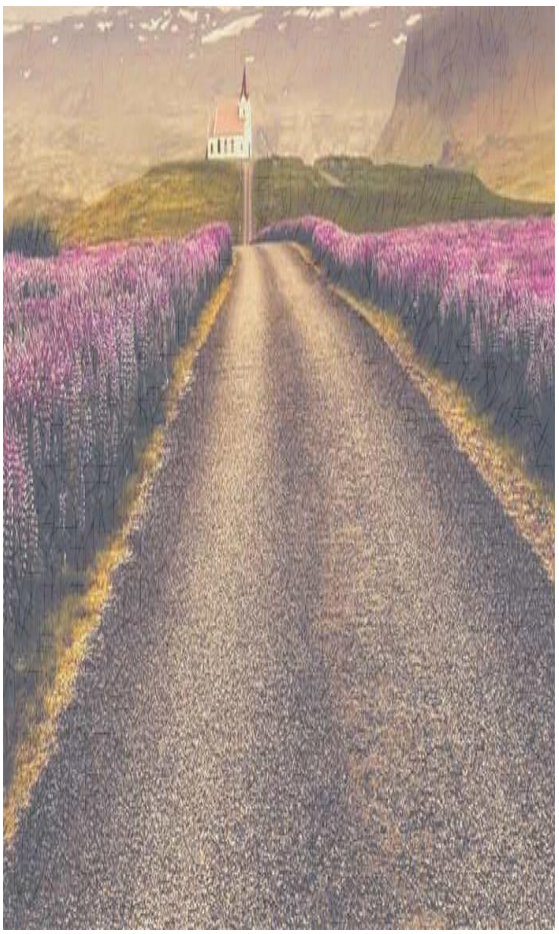

आंख बिछाके

हम आंख बिछाके बैठे हैं
सुख लाख लुटा के बैठे हैं
तुम पार समंदर रहती हो
आने की आस लगाकर बैठे हैं

अब खौफ न खंजर, आरी से
न तीर, तलवार दुधारी से
इक नज़र तेरी पर गर्दन हम
बाजार बिछाके बैठे हैं

हो रगों में तुम पर नाम न लें
अब हमसे कोई काम न ले
खुशियां पीट थक गईं
हम किवाड़ लगाकर बैठे हैं

हम हार से सौदा कर लेंगे
तेरे महल के बगल में घर लेंगे
किस रोज सड़क से गुजरोगी
तिरपाल लगाकर बैठे हैं

है भीतर जो वो कहने दो
मत पोछो इनको बहने दो
ये अश्क कहां ये गजले हैं
हम बरसों दबा के बैठे हैं

आधुनिक हिंदी साहित्य की महान विभूति –
आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

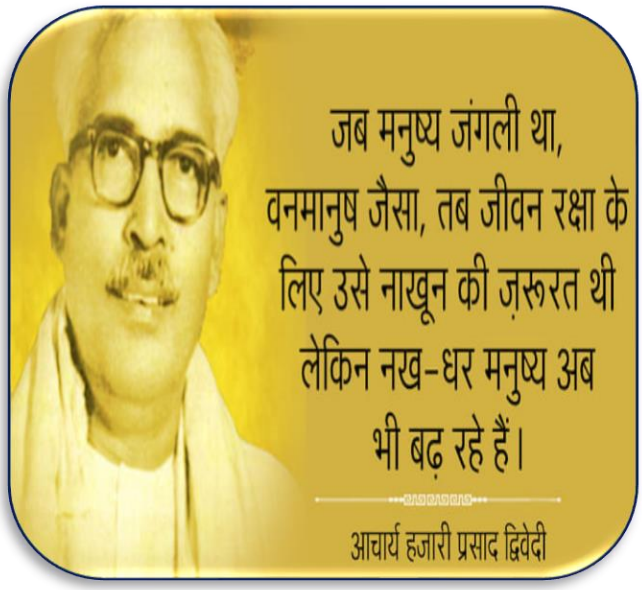

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी आधुनिक हिंदी साहित्य की चेतना के प्रतीक हैं । उनके बहुआयामी व्यक्तित्व ने हिंदी साहित्य को भारतीय चिंतन परंपरा का प्रतिनिधित्व करने वाली सशक्त भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया । उन्होंने इतिहास और आलोचना जैसे सृजनशील विधाओं में नयी संभावनाओं के द्वार खोले। इतिहास, शोध, निबंध, आलोचना, पत्र लेखन, संस्मरण, उपन्यास लेखन के क्षेत्रों में मौलिकता और उत्कृष्टता के कारण वे महान रचनाकार बनकर उभरे । उनका जन्म 19 अगस्त, 1907 को बलिया जिले के आरत दुबे का छपरा नामक गांव में हुआ था।

वे वर्ष 1950 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष पद पर सुशोभित हुए। वर्ष 1957 में उन्हें पद्मभूषण से अलंकृत किया गया । वे राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न संस्थाओं-नागरी प्रचारिणी सभा, विश्वभारती, राजभाषा आयोग, साहित्य अकादमी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान आदि की साहित्यिक गतिविधियों से निरंतर जुड़े रहे। द्विवेदी जी इतिहास को तीसरी आँख मानते थे। वे कहते थे कि जो इतिहास को स्वीकार न करे वह आधुनिक नहीं और जो चेतना को न माने वह इतिहास नहीं।

द्विवेदी जी की रचनाएँ हैं –

उपन्यास	बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचंद्रलेखा, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा
निबंध	साहित्य सहचर, अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज, आलोक पर्व, विचार-प्रवाह
शोध, आलोचना	सूर साहित्य की भूमिका, कबीर, हिंदी साहित्य का आदिकाल, मेघदूत- एक पुरानी कहानी, कालिदास की लालित्य योजना, पृथ्वीराजरासो, नाथ सिद्धों की बानियां

19 मई,1979 को दिल्ली में उनका निधन हो गया।

(राजभाषा विभाग की वेबसाइट से)

आधुनिक हिंदी साहित्य की महान विभूति –
आचार्य शिवपूजन सहाय

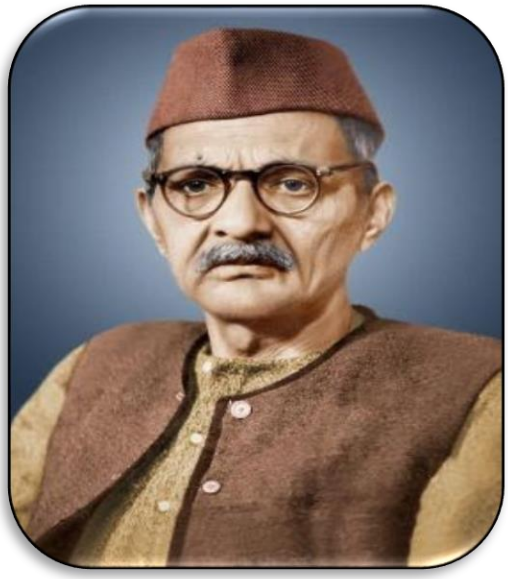

आचार्य शिवपूजन सहाय का जन्म 9 अगस्त, 1893 को बिहार के ग्राम उनवास, थाना इटाडही, जिला शाहाबाद में हुआ था। वर्ष 1939 में वे छपरा के राजेंद्र कॉलेज में हिंदी के प्राध्यापक नियुक्त हुए जबकि उनकी औपचारिक शिक्षा केवल मैट्रिक तक की थी।

न जाने कितने साहित्य महारथी हिंदी संसार में ऐसे हो गये, जिनके लेखन को उन्होंने संवारा-सजाया। उपन्यास सम्राट प्रेमचंद, राजा राधिका प्रसाद सिंह, जयशंकर प्रसाद की कृतियां उनकी लेखनी का स्पर्श पाकर निखर गई। प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रमण ने श्रद्धा के फूल में लिखा है " आचार्य शिवजी ने लिखा कम, पर कामायनी की पांडुलिपि में संशोधन करने का गौरव उन्हें ही प्राप्त है।"

उनकी संपादन-कला के विषय में एक बार द्विवेदी ने कहा था, "संपादक के रूप में वे एक माली थे। उसी तरह नये पौधों को रोपते थे। उनकी बेतरतीब झाड़ियों को काट-छांट कर सुरम्य बना देते। उनके द्वारा संपादित पत्र-पत्रिकाएं केवल सामयिक दृष्टि से ही नहीं, साहित्य की स्थायी दृष्टि से भी ग्रंथों की तरह महत्वपूर्ण है।" उन्होंने एक दर्जन से अधिक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन और सह-संपादन किया, जिनमें प्रमुख हैं- मारवाड़ी सुधार, मतवाला, मौजी, उपन्यास तरंग, गोलमाल, समन्वय, गंगा, बालक, जागरण, हिमालय, माधुरी।

शिवपूजन सहाय ने समस्त जीवन हिंदी की सेवा की। अपने जीवन का अधिकांश भाग हिंदी भाषा की उन्नति तथा उसके प्रचार-प्रसार में न्योछावार किया। उनकी प्रमुख रचनाएं हैं- गंगा, जागरण, हिमालय, साहित्य, वही दिन वही लोग, मेरा जीवन, स्मृति शेष, हिंदी भाषा और साहित्य।

आचार्य शिवपूजन सहाय का निधन 21 जनवरी, 1963 को पटना में हुआ।

(राजभाषा विभाग की वेबसाइट से)

आधुनिक हिंदी साहित्य की महान विभूति –
राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन

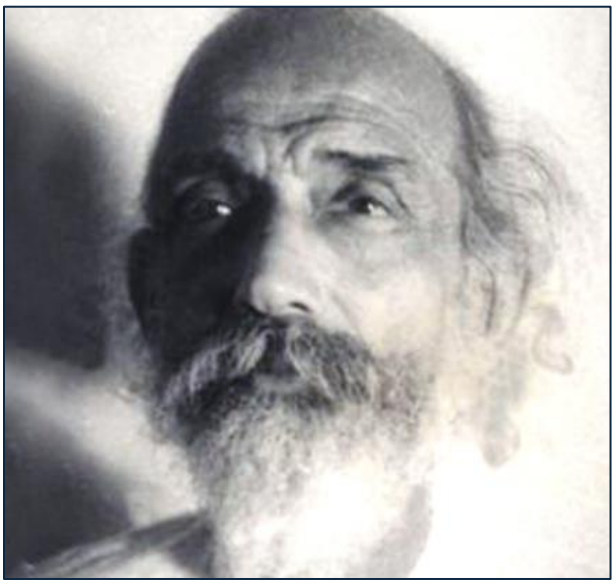

पुरुषोत्तम दास टंडन को राजर्षि के नाम से भी जाना जाता है। हिंदी भाषा की प्रगति और विकास में उनका अप्रतिम योगदान है। उनका जन्म 1 अगस्त, 1882 को इलाहाबाद के मीरगंज मुहल्ले में एक संपन्न खत्री परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री शालिगराम टंडन था। वे राधास्वामी संप्रदाय में दीक्षित थे। संप्रदाय में दीक्षा लेने पर उनका नाम प्रेम सरन रखा गया था।

वर्ष 1904 में बीए तथा 1907 में एमए इतिहास की शिक्षा प्राप्त करने के बाद उन्होंने कानून की परीक्षा पास की। वर्ष 1910 में प्रयाग हिंदी साहित्य सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष मालवीय जी ने टंडन जी को सम्मेलन का महामंत्री नियुक्त किया। टंडन जी ने वर्ष 1908 में जब वकालत शुरू की, तब से वे 'अभ्युदय' का संपादन करने लगे थे। पंडित बालकृष्ण भट्ट के अनुरोध पर 'प्रदीप' में लिखने लगे थे तथा अपनी रोचक और ओजस्वी लेखनी से सबको प्रभावित किया। टंडन जी का कार्यक्षेत्र बहुत व्यापक था। राजनीति, साहित्य, समाज सेवा, अध्यात्म-चिंतन आदि अनेक क्षेत्रों में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनका व्यक्तित्व कर्म प्रधान था। वे अपने सिद्धांतों और विश्वासों को कार्य रूप में परिणत करने की अदम्य इच्छाशक्ति रखते थे।

उनके ही आत्मबल के परिणामस्वरूप साहित्य सम्मेलन की विशाल इमारत खडी हुई थी और उनकी ही चेष्टाओं से राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को स्वीकृति मिली। उनकी हिंदी सेवा के संबंध में भारतीय आत्मा पंडित माखनलाल चतुर्वेदी की यह उक्ति बड़ी सार्थक है - "हिंदी सेवा, हिंदी की रक्षार्थ सारे त्याग, चेष्टाएं, पुरुषार्थ एवं प्राणाहुति का सम्मिलित नाम ही है - पुरुषोत्तमदास टंडन।" दूसरे विश्वयुद्ध की समाप्ति के बाद देश की संविधान सभा बनी। टंजन जी उसके सदस्य चुने गए। संविधान सभा में भी टंडन जी के भाषण एवं हिंदी के पक्ष में प्रस्तुत अकाट्य दलीलों से प्रभावित हो पूरे सदन ने एक स्वर से हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाना स्वीकार किया। वर्ष 1961 में भारत सरकार ने उन्हें भारत रत्न से अलंकृत किया।

1 जुलाई 1962 को 80 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

(राजभाषा विभाग की वेबसाइट से)

01.10.2023 से 31.03.2024 की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची

क्र.सं.	नाम (श्री / श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तारीख
1.	मृदुला ए जे	सहायक लेखा अधिकारी	31.10.2023
2.	जयलक्ष्मी एस	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2023
3.	गाथा बालकृष्णन	सहायक लेखा अधिकारी	30.11.2023
4.	मोहनदास एम	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.12.2023
5.	प्रभाकरन ई	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.12.2023
6.	अनंतलक्ष्मी एस	सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2023
7.	मोहनन एम एम	सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2023
8.	राधा के एन	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.01.2024
9.	वर्गीस पी टी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.01.2024
10.	श्रीकुमारी एम	सहायक पर्यवेक्षक	31.01.2024
11.	गिरिजा वी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	29.02.2024
12.	शोभना के	पर्यवेक्षक	29.02.2024
13.	राजू सेबास्ट्यन कोट्टयिल	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2024
14.	उषा आर	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2024
15.	साबू थॉमस	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2024
16.	श्रीकुमार वी	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2024
17.	बालकृष्णन एन (नं. 2)	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2024

आम प्रयोग के अंग्रेज़ी-हिंदी वाक्यांश

A		
1.	Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए
2.	Approved	अनुमोदित
3.	As a matter of fact,	वस्तुतः
4.	As a result of	के फलस्वरूप
5.	As amended	यथा संशोधित
6.	Action as discussed	चर्चा के अनुसार कार्रवाई करें
7.	A brief note is placed below	संक्षिप्त टिप्पणी नीचे रखी जाती है
8.	Attention is invited to	की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है
9.	As modified/revised	यथा संशोधित
10.	Action may be taken as proposed	प्रस्ताव के अनुसार कार्रवाई की जाए
11.	Arrangement may be made	व्यवस्था की जाए
12.	As proposed	यथा प्रस्तावित
13.	As per details given below	नीचे दिए ब्यौरों के अनुसार/अनुरूप
14.	As regards	के संबंध में/के विषय में/के बारे में
15.	As required	आवश्यकतानुसार
16.	As soon as possible	यथाशीघ्र
17.	According to/in accordance with	के अनुसार
18.	As usual	हमेशा की तरह/आम तौर पर/सामान्यतः
19.	Await reply	उत्तर की प्रतीक्षा करें
B		
20.	By authority of	के प्राधिकार से
21.	Brought forward	आगे लाया गया
22.	Before issue	जारी करने से पहले
23.	By return of post	लौटती/वापसी डाक से
24.	By virtue of office	पद के नाते, पद की हैसियत से

C		
25.	Circulate and then file	परिचालित करके फाइल किया जाए
26.	Copy enclosed for ready reference	सुलभ संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न
27.	Copy forwarded	प्रतिलिपि अग्रेषित
28.	Come into force	लागू होना
29.	Confirm, please	कृपया पुष्टि करें
30.	Certified that	प्रमाणित किया जाता है कि
31.	Connection with, in	के संबंध में
32.	Consultation with, in	से परामर्श करके
D		
33.	Draft as amended is put up	संशोधित प्रारूप/मसौदा प्रस्तुत है
34.	Duly complied	विधिवत् अनुपालन किया गया
35.	Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
E		
36.	Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए
37.	Early orders are solicited	शीघ्र आदेश प्रार्थित है
38.	Enclosure to the letter	पत्र का अनुलग्नक/संलग्नक
39.	Expedite action	शीघ्र कार्रवाई करें
F		
40.	Follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
41.	For favourable action	अनुकूल कार्रवाई के लिए
42.	For perusal	अवलोकनार्थ
43.	For information only	केवल सूचना के लिए (मात्र सूचनार्थ)
44.	Further orders will follow	आगे और आदेश भेजे जाएंगे
G		
45.	Give top priority to this work	इस काम को परम अग्रता दें
46.	Give details	विवरण प्रस्तुत करें/ब्यौरे दें
H		
47.	Has been dealt with suitably	समुचित कार्रवाई की गई है
48.	Has no comments to make	को कोई टिप्पणी नहीं करनी है

49.	His request be acceded to	उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाए
50.	Hold in abeyance	प्रास्थगित रखना
	I	
51.	In public interest	लोकहित में
52.	Immediate action	अविलंब/तत्काल कार्रवाई
53.	In abeyance, held	आस्थगित/निलंबित, रोक रखा गया
54.	In accordance with	के अनुसार
55.	In anticipation	की प्रतीक्षा में/की प्रत्याशा में
56.	In compliance with	का पालन करते हुए/के अनुपालन में
57.	In due course	यथासमय/यथाविधि
58.	In exercise of	के प्रयोग में/का प्रयोग करते हुए
59.	I agree	मैं सहमत हूँ
60.	Issue today	आज ही जारी कीजिए/आज ही भेजिए
61.	In lieu of	के स्थान पर/के बदले में/की जगह
62.	In modification	के संशोधन में/के आशोधन में
63.	Initiate action, to	कार्रवाई प्रारंभ करना
64.	Inter alia	अन्य बातों के साथ-साथ
65.	Inter se	परस्पर/आपस में
	J	
66.	Just below	ठीक नीचे
67.	Justification has been accepted	औचित्य स्वीकार कर लिया गया है
	K	
68.	Keep in abeyance	स्थगित किया जाए/रोक रखा जाए
69.	Kindly acknowledge receipt	कृपया पावती भेजें
	L	
70.	Last pay certificate	अंतिम वेतन प्रमाण-पत्र
71.	Liable to disciplinary action	अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है
	M	
72.	Matter is under correspondence	इस विषय पर पत्राचार हो रहा है
73.	May be filed	फाइल किया जाए
74.	May be informed accordingly	तदनुसार सूचित किया जाए

75.	May be kept in view	ध्यान में रखा जाए
76.	May be passed for payment	भुगतान के लिए पास/पारित किया जाए
77.	May be sanctioned	मंजूर/स्वीकृत किया जाए
78.	May please be seen	कृपया देखें
	N	
79.	Necessary action may be taken/initiated	आवश्यक कार्रवाई की जाए/प्रारंभ की जाए
80.	No progress has been made	कोई प्रगति नहीं हुई है
81.	Noted for future guidance	भावी मार्गदर्शन के लिए नोट कर लिया
	O	
82.	Obtain formal sanction	औपचारिक मंजूरी/स्वीकृति प्राप्त करें
83.	On perusal of the application	आवेदन पत्र का अवलोकन करने पर
84.	On probation	परिवीक्षाधीन
	P	
85.	Paper under consideration	विचाराधीन काग़ज़
86.	Passed for payment	भुगतान के लिए पास/पारित
87.	Please speak	कृपया बात करें/बात कीजिए
88.	Please discuss	कृपया चर्चा करें/चर्चा कीजिए
89.	Please inform accordingly	तदनुसार सूचित करें
90.	Permitted	अनुमति दी गई
	Q	
91.	Question does not arise	प्रश्न नहीं उठता
92.	Quote reference	संदर्भ बताएँ
	R	
93.	Relevant papers be put up	संबंधित काग़ज़ात प्रस्तुत किए जाएं
94.	Reminder may be sent	अनुस्मारक/स्मरण-पत्र भेजा जाए
95.	Retrospective effect cannot be given to this order	इस आदेश को पूर्वप्रभावी नहीं किया जा सकता
96.	Requires modification	आशोधन की आवश्यकता है
	S	
97.	Sanctioned	स्वीकृत/मंजूर

98.	Submitted for approval	अनुमोदन के लिए प्रस्तुत
99.	Submitted for information	सूचना के लिए प्रस्तुत
100.	Submitted for orders	आदेश के लिए प्रस्तुत
101.	Submitted for perusal	अवलोकन के लिए प्रस्तुत
102.	Seen, thanks	देख लिया, धन्यवाद
	T	
103.	The matter is under consideration	मामला विचाराधीन है
104.	The required papers are placed below	अपेक्षित काग़ज़ात नीचे रखे जाते हैं
105.	This is not admissible	यह स्वीकार्य नहीं है
106.	Through proper channel	उचित माध्यम से
	U	
107.	Under intimation to this office	इस कार्यालय को सूचित करते हुए
108.	Under the auspices of	के तत्वावधान में
109.	Until further orders	अगले आदेश तक
	V	
110.	Verified	सत्यापित
111.	Verified and found correct	पड़ताल की और ठीक पाया
	W	
112.	We are not concerned with this	इसका हमसे संबंध नहीं है
113.	Whichever is earlier	जो भी पहले हो
114.	Will be dealt with severely	कड़ी कार्रवाई की जाएगी
115.	With immediate effect	तात्कालिक प्रभाव से, तत्काल से
	Y	
116.	Year ending	... को समाप्त वर्ष
117.	You are hereby informed that	आपको इसके द्वारा सूचित किया जाता है कि
118.	Yours faithfully	भवदीय, भवदीया
	Z	
119.	Zone of consideration	विचार परिधि

शाखा कार्यालय, कोट्टयम म में हिंदी पखवाड़ा समारोह 2023 के दौरान आयोजित पोस्टर डिज़ाइनिंग प्रतियोगिता में "चंद्रयान" पर प्रतिभागियों द्वारा बनाए गए पोस्टर

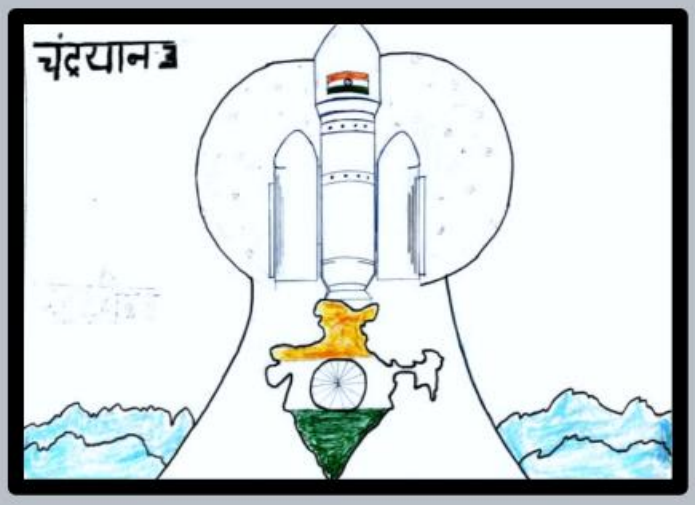

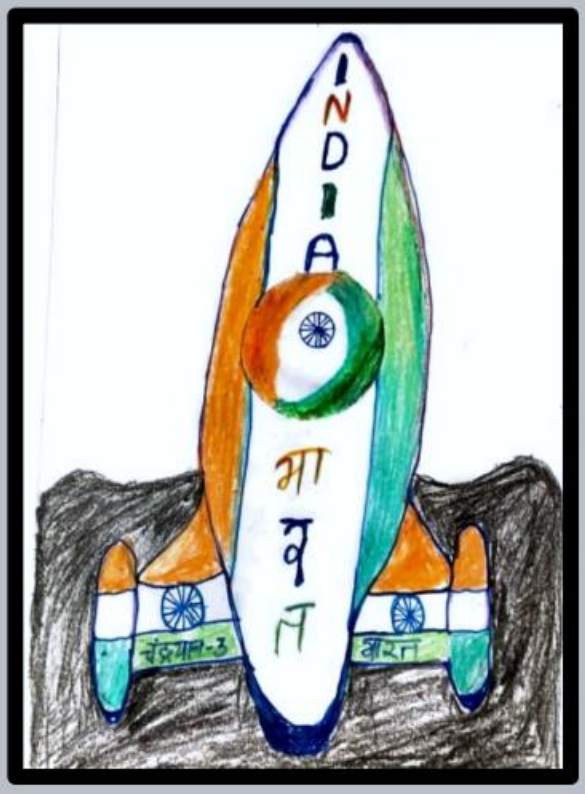

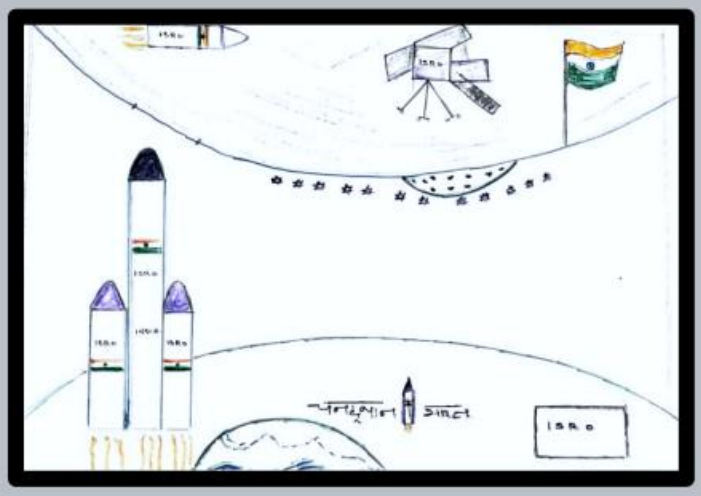

प्रकाशक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695001